

પ્રભુજીનું

સમાજ, ધર્મ અને રાજ્યીય સેવા બળવતું નૂતનયુગતું જૈન સાસાહિક.

તચો: રત્નલાલ ચીમનલાલ ડેંડારી.	શ્રી મુખર્જી લેન સુવક સંબંધતું સુખગત.	વર્ષ ૨ જુન, આ. ૪૨ મે.
સદતની: કેશવલાલ ગંગાધરં શાહ	વાર્ષિક વાગ્યાનં દા. ૨-૮-૦	શાનીચાર, તાં ૧૬-૮-૩૭.

સાગરાનંદભાઈ

નવી ચઢાઈ!

દોઢામાં મૂકેલો શિષ્ય.

[નીચેની ચેલોજ સુરતથી
સાગરાનંદભાઈને મુંગઠ ગમા-
ચારમાં તા. ૧૫-૮-૩૩ ના
રોજ જાદાર પદ્ધતિ હે. જા
એકેજન્ટી સમગ્રત કેન સગ-
નગમાં ચૂંગ ખળગાટ મર્યાદે
હે. અન્ય કે જાજ ચૂંઘીએ
તેમની તેર સ્વારીઓ કરતી
આ ચારીની સ્વારીના નીચેની
નવીનાતા હે. ગોદામે કેવા
દોપણે સેનતમાં મુશ્કી હીની
તેમ સાગરાનંદ હેઠળના
મેતનગમાં ચેલો મુકનાર હે.
અન્યતા કેવાના કોણ રાન નોંધ
રહી છે હેઠળ સ્વારીના છેલ્લી
ઘરીય પાંક હું હસનાર જા
વખતે કેલા જાગે દ્વારી?]

સાહેબ, શ્રી ચાગરાનંદ-
ભૂતીભરણ જ્યાયે છે કે
પશુપિતૃપર્વમાં ગાડીયાં
પ્રવાહ પ્રમાણે શાસનરચીક
ધર્મ આત્માને તથાંત
ગહી. અને તત્ત્વતરણની
પુસ્તકના જ્યાયારે લે શ્રી
વિલયાનસૂરીબરણ તમનું
વિલયમાણિકસિહસ્રીલંજે
મારી સાથે થાયારી
કરી મને કરાયે તો હું
મારી જીવન જીવન કરેલા
તેવાર હું તેમનું તાને જલ્દી
મારી શિષ્ય સમૃદ્ધભાઈની
જીયાનની જીવની તેનું વિલય
ગંગાના આપણા લેખાર હું
ને તથા હારે તો તેમનું
પોતાની હાર કણું કરી એક
ઉદ્ઘાસનું પ્રાયશ્રિત હેતુ

આ મંત્ર છુ.

સુંધર, તા. ૧૬-૮-૩૩.

શ્રીમતી,
શ્રીમાન,

સુ.

સચિનય નિવેદન કે અત્યારે આપણા સમાજની પરિસ્થિતિ વિચારણા માગે છે.
સમાજમાં જીયક સંગૃહુન અને સ્વનાત્મક કાર્યની જરૂર છે. બુધોની શહિતને જુદી
જુદી હિસામાં વધાઈ રહી છે, તેને સ્વાને સંયુક્તાળન ઉત્પન્ન કરવાની આપદ્યાદત્તા
છે. એમ વાગવાણી શ્રી શેષામ્ભર ભૂતિંપૂજક કેન સંમાજમાં સમયધર્મને
અનુસરનારા, નવી ભાવનાઓ સ્વિકારનારા, વિચાર સ્વાતંત્ર્યને માનનારા
ઉદેશવાળી સંસ્થાઓએ એકે થાક વિચારણા કરે, એ હેતુથી આપને નિમન્યા
આપતા અમને હું થાય છે.

મધ્યસ્થ સ્થળે એકેન થવાય તો ઘણા ભાઈઓ લાલ લાઈ શકે. આથી વડેંદ્રા
સ્થળ પસંદ કરવામાં આજું અને ત્યાંના શ્રી લેન સુવક સંબંધતું
હુંથી સ્વિકાર્યું છે.

આ પ્રશ્ને આપની જીવાન અને સહકારની આસ જરૂર છે. તો આપની
સંસ્થા તસ્કરી પ્રતિનિધિઓ જોડાવી આકારી કર્યો. કમિટીનું કામકાજ તા. ૩
સપ્ટેમ્બર ૧૯૩૩ જાદું શુદ્ધ ૧૪ વિચાર સંવત ૧૯૬૯ ના રોજ શરે થયો, તે
પ્રસ્તે જરૂર પદ્ધતિના.

વિચાર કરવાના સુખ સુદૂ.

સમાજમાં જીયક, સુવક સંગૃહુન, સ્વનાત્મક કાર્ય, કેસરીયાં પ્રકરણ વિન
પહેલા પેસાના જ્યાયેલ ઉદ્ઘાસને અનુસરનારી સંસ્થાઓ વહુમાં વહુ એ
પ્રતિનિધિઓ જોડાવી શક્યો.

દિન સેવકો,

શ્રી મુખર્જી લેન સુવક સંબંધ
૨૬-૩૦, ધનાલું કોટી,
સુરોગત ના. ૩.
સત્ત્વાલ ચીમનલાલ ડેંડારી

સચિન—આપ તરફથી આપનાર પ્રતિનિધિના નામ તા. ૨૬ જોગા ૧૯૩૩
જાદું શુદ્ધ ૬ માઝગાર પહેલા જાપી જગ્યાનથી.

मुनिसंभेदन कार्यसाधक केम अने?

मुनिसंभेदन मेलवानी लहोरात थाए थिए: टेकाड़ सांख्य-ओना ते भाटीनी संगतिना उत्तरी पश्च आपी शुभा, आने आ संभेदन माटे तडावार तैयारीओ. बछ दोलाना सर पश्च आपता आप छे; अने तेथीज कैन समाज तेना प्रति आपतानी नवरे गीट गाँडी नेहे रेखो छे.

परंतु मुनि-संभेदन कार्यसाधक अनाप्तुङ्ग होता अनोड प्रकारसां साप्त पश्चात् बादवार्क लेहुओ. आले आपाप्तते पश्चात आपे छे, ते भाटे होहेहुकी आपिमा विना त आले तेम समाजां पश्चात् पश्चात दे, जो दुरु उत्तरा साप्त पश्चात् इष्ट होहेहुकी आपिमा विना आपेक नथी.

आ संभेदन आप तपामेल, सामग्रेकू पूर्णुः न होप; तेमा अरतरमेलना, पापमेलनाना, अने अन्व अलोक मध्याना साहुओने रेखान होता. आपा प्रसंगे हुपामेहुकी राजनामा आपतो ते राजार्थिमेना राजार्थ तरताव राजार्थ आपताना छे.

आ उपर्यां वातावरकूपी रक्षणता नवरी छे, आ भाटे परंपर भान्केहाना साहुओगां के भोगोह आपे वर्त छे ते हुरु करवानी आपसपक्ता छे. आ भोगोह केम हुरु रेखा तेनी चोलना साहुमेलनना संचालिको विचारी तेनो आपम करवानो.. छे के लेथी अभेदन आपतो पहेला ते भोगोह हुरु आप अने प्रभासिक, चर्चा, विचार विनिमय बछ राहे. आ उपर्यां अने अपे लाप पश्चात् अदरवानी आपसपक्ता छे अने ते ह्या ते पाला आपींसु.

संभेदन माटे रेखान गुरुरातानी आहाराज होप; पश्चापकी शुभातामा छे, ते गुरुरातामा आ संभेदन अरापतो ते कामग दी शाकाप्तुङ्ग नथी. ऐ द्रिष्टें अने तो आपाड़ अने चेनाक परंपर करवातुङ्ग मन आप छे. कोइ लो पश्चापकी ते वरेक लाल रवृपामा ग्रन्थित नथी अने बीजुङ्ग वेसरीवाक अक्षराने अने लाना प्रक्षीर्ण विचारक्षा माटे हे लेना हुक्क गाटे क्षमा पश्चां लेवा तेनी चोलना गाटे ते ह्या परंपर करवा चोल द्येत छे.

साहुङ्ग आप क्याथी गाए? पश्च आ जापतो क्षमा सुधी नकापार इरवा छे? द्येते तो परिचयितां पक्षी आपुवानी नवर छे. लाल इक्षेत्र कंकाल अने राजार्थी गारामारी होप तो आप चित्तिना विकासनी आपा वापरे पक्षी छे. ओढेते तेनी आपे तो क्षेत्राव प्रेक्षार्थानी नवर छे. अर्भगुहेने शुभाङ्ग नवराता हेतु लेहुने के लेवे तमे साचा राह उपर आपे तमे “हा अ, छा,” करवाने अने जर्मनी लेच्छा नीवी अमे अग्नां अपापता आपा हीधुङ्ग, पश्च हेवे तेव इरवाने अमे तैयार नथी. हुक्क पश्च लमारे जे लमारे चाह अद्वेषाव न होप तो उपाप्तो आपी को, अभारे उपाप्तोने इक्षेत्र अने कंकालगडो अनावता नथी; परंतु आप विकासावगे अनावता छे. तेमां इक्षेत्र अने कंकासने रेखान नहीं. लेहुने तां तो आप शान्तिज होप, आप अपार आपतानी नवर छे. कैन समाज आ आपत कापारे समाजये?

लेखकः—अमुदवाची.

बीजुङ्ग पश्चापकी वातावरना भाटे होते अपल डोधपक्ष पक्ष न को; पश्चापक्ष द्यमितान के ते एही संभेदन आप तां सुधी पश्चापकी के तेने आपां क्षरहो विषे डोजनी निवा के रुदि इरवा भाडी हेचां आरे, अरडाने पक्ष आ आपतगां घूण संभेदन रहेचातुङ्ग छे, आ प्रसंगे आप साहु संभेदन समझ क्षमा अक्षम रेतु बध राह तेनाज निहीष दी पश्चापकी दर नोह आपत्कु आप तो गार्ज कोङ्क शाह आप, आ उपरांत आ संभेदनां डोधपक्ष पक्षना आपहोनी हाजरी न होती लेहुओ; हाजरी होप तो ते गाप तांना रथानिक संघना भाजुपेनी. आपताना आपहोनी हाजरीनी तां जडू नथी, हेतु तेथी अक्षम वाहु शुभाचय छे अने शुभेचलवाणा जनवाने संभाव छे.

आ उपरांत होहे खक्कना साहुओने गेतपेतानो पत्र व्यवहार अपे करवो लेहुओ. आपाथी ते संभेदन भावाप अने ते चाले तां सुधी गेतपेताना खक्कना आपहो साहुओ. पत्र व्यवहार अपे चाले लेहुओ आपता तो संभेदन पुरतो पत्र व्यवहार हुहो शुभी बीज लाल पत्र व्यवहार पर अंगुरी भाजो लेहुओ; अग्नु के पत्र व्यवहार इराज अक्षो वडु शुभाचय अने तो लाल नदि आपे; गटेज आपी आपत्कपता छे.

आ अपा उपरांत तेहर्नुः क्षमा शुभ विक्ट छे; अने ते लेहेतन उक्षु इरवातुङ्ग. ने नीति-निपत्तो, इरावे दे निर्धुपो संभेदन के ते अपानुः चालन अपरिवित आप राह तेनी निरीक्षा इरवा अने तेना अज भाटे क्षम फाला देवा. आ राम जो ते भाटे ले निर्धुपो, इरावे दे नीति-निपत्तो इरवानां आपे ते अपां संभेदन तरेक्षीज अपाचाव अने तेना चालन भाटे ते संभेदन भाटे तेना अपाम आपहो लेहुओ. आप जो तेज तेना चालन भाटे रेते राह के चांधाडो अपिती हेपरेण राख्यो—आप आपा छान नक्कि करौ, तेमां ते अपा साहुओने अंगुरी इष्ट शुभ पक्ष.

गाप गापकार संरक्षणो छाक्हो. रह उत्तरा धूरेतान ले संभेदन अरवानो हेतु होप तो ते निर्धुपोउपीजे; डोजड द्येन आपने रपष लेहु दीधुङ्ग छे के नवारे शिष्यमोहपर तराप गते छे, त्यारेज साहुओ. ते हुरु, इरवा चेता भगवा आपे के, तेमो चोलानी जाहरे ले क्षम व्याजनी शिष्यमानानी वर्तन आप छे ते तरेक भाव अपां आपा आने करवा छे, चांधीताला लाई तेवा नहोतीज वाही अने आपे डेसीपाञ्जने पत्र डेवा काढी उलो छे तेना गाटे क्षम अपालोग अपी नाप मेगवा इष्ट क्षम नथी शुभ अपातुङ्ग.

गोद्ये आप अंकज डाम भाटे संभेदन होप तो ते निर्धुपान अनातुङ्ग छे; साहु संघने वापता सर्व अक्षो ज्ञाना भाटेज ले क्षमुङ्ग शुभु होप तो तेने रवीचुक्त अने सुधारक ए गाने लेवानी ले छे, सुधारक अटल्हांग के के चालानुकार वर्तन आप हातु द्येत तो गवीनी अनातुङ्ग छे तेमां इरवारे छै; तेम इरवाने अद्ये शाळानुसार वर्तन न इरवानो जां चाला-

पंचानी प्रतिशा.

(सामाजिक नवलिका)

लेखक,

श्री पद्मदेवमार.

प्रकरण उ सुं.

नव सहजनां भाषा.

वर्षाना गालामां, खुशावती नगरी ने तापक्षुर यहोर साव अद्वितीय वर्षां हो आम झीजो तो थाले. तो उ हाथ रख्ये भार वासावती जोड़ीज नहि पथ शरतमां ने विषया तथा अन्य पंद्र सभो। पथ वासिनी लहारन गम्भुर्ण हो. धर्यार घटेहोये ते सर्वना व्यवहार अपी एकत्र जगधुमार्थी तेगते जातव देइता हो. शरतमां ने विषयाये परम्परनी धम्यार्थी साहार्दगां लग्न पतावी धीयो हो. आमे अति-पूर्ण इष्ट शुद्धसंसारनी भुजा तेजो बहन देहां रेनेद सामाजिकां विना स्कौये वर्ते हो. विषयात् आ परम्पुर पथ वासित्रप सदेवा तंनें क्षु भाई शुभेत् हतुः छतो आ शुद्धतिक्षुभ ने कुचन वीरेना अडन निक्षेप सामे तेम्हु क्षिप्यव. जर आरत् नहि, जगम्भो मोह ने 'शतिकार' नी विष्या बोलार्ही ने आ शुद्धनोहे ते अप पाठी जेना हण, हवे लेसना लगामा हतो.

सुधारेत्वा देहा भवती पेव आ दुक्षीमे लग्ने क्षु परम्पुर नवी गोली दीते देहाव राखी एक धीयो एक रुक्तामक झोपो उपाया भाष्या.

कुचन भाडानी अदानीक आपस्येही जोड़कार, नगरीना तेम्हा ज्ञानाना सारो वहताजोना आच्छें जोड़वाया. वणी 'सेवन' नामा जोड भासिक पक्ष राह रहुः', 'नवकृतन' भाड़क छवपर अंदुर्या राधी साही ने भरण आपामा—सामाजिक अप्तो ज्ञानाना गाला. धारिक विषयामां पक्ष भानीप देहो अक्षर यामा. प्रथम अंडेज जनतानु अदार्थिय शुभ. शुद्धो आ वात इत्यां आते तेम हतुंज नहि; एटेवे एक वर्ते जे सामे ज्ञाना फान उर्वा पथ भैद ने शुद्धी आते यासनाना शुद्धनो. पैतानी अपो अंधे दीर्घ आ प्रदृष्टि ग्रत्ये ऐदरमारी दाखें ते संखित हतुंज नहि. आरंभां तो वारे देहारे विशेषना आणा दाखना. आ शुद्धने तेहाना—सामाजिक उतारी धारणा यतो. सेव्या पक्ष योग सम्बर्धन संतोषो ज्य योग अने विशेषज्ञो गोटो आम आपस्यु—मागिको लाल लेचा लायो. औछ तेहू पद्मावतीये 'वैरोध आविभायाणा' रस्यां. एमां धारिक ने छुल्लन्तु विषय औरोने आपसानु आनंद्यु, परम्पराक फीक्कां अने सारा सारा पुस्तकों वरश्यु-मीजोना धन्नाम आपाया मांधार. एटेवे एक वेळा जे जैशेहो पद्मा सामे मुख भविष्यता ने विषयाने वहेवी वहेवा रामावा नहि ते आमे होको होये शालामां आपाया लाग्या. जेतन नेतामां तो शालानु भक्तान नाहुँ पक्ता लाग्यु.

जीले प्रधान 'आपायती विष्याअम' ज्ञानीने इहो वेळा इव्याह थेह. अग्नीजों उपाडे मुजे तो नहि पक्ष प्रधानपक्ष सरवती वसावती. आम छां जेमां पक्ष विषयामां आपाया लागी. आपस्या संसारनी विषया एटेवे 'आपस्युननी मुहि!'

अरे लोगो अचाज नयी जेहुँ मुझे प्राप्ति! जेना पहाना पैसापर जेनो हठ नहिं तो भील ते अपो सुख जेने होय? डेहार परीगां आपाय वैतरा पक्षी पुरा शेष्वां पक्ष न भले। इष्टमेहुँ कुचन न वेही शाल छतो देहाना आवासन वगद जे सहन क्षनारी झेगोले 'पद्मापद' आशीर्वद वरपावी आशमो आसरो लायो. विषयानी हिंगने जेमनमां पक्ष प्राप्त धूर्णे जेहुँ इष्टावोना के 'साक्षरा-पिप्रना' अपेने तिलावली हायी अदायीरा तेमने मुजे शेष्वी जाना वारो आओ. पानायां हेहाना धम्ये, पद्मावतीनी 'आपस्युनी' समाजमां डेह अनेरी भात पाठी, नहीं शेषानी प्रसादावी.

जेनी साथी कमजोरां बोये लेनाद आमे जेनी अंखेना प्रक्षुक जन्मा—जान प्रयारिथी जेनानी लुजो तेमो जेना लाज्या.

विषार्थी वग्निं—श्री पुस्तकोनी लहायी क्षी अभ्यासमां जे सानुक्षणा बरत-जान ने सुखायेहरी निपुणीजे क्षी आपी लही तेनाथी जेहुँ जे वर्षमां आ दुक्षी अत्ये प्रेम जन्में हठो के एक धाम्प घटावं जेमना साह आ विष्यायमो। गमे तेवा संहो लहाना तैयार यतां पात्र न पडे.

वणी लारम्भुरेमां 'शुद्धुण' भाटे कम्पा पक्ष पद्मावतीले लीधी हुती. आम तेहालहुरी ने समाज तरह गोनु लहू अग्रह भेजपतु.

आम छां जेने रहेहुरी रहेहुरीं तहन साही ने आदार पक्ष साहो बोयी. आम तिथि जत विना आली ज्या देहान नहि. देहर्थन-सामापिक-पक्षभार्यपालन अने पक्षतिथि प्रतिक्षेप जे अइज-शुद्धानी हिंगनी के जे तेष्यु समझती ने इष्टपती विषयाना शहि रवजही भानी तरहाना हेहा आपो आली धूके के जेनो तेने जोड़ असांगी अनुकूल येहो हुतो, जेटेवे जे माटे सहा ते येतिलज रहेही. शोभना पद्मबोने सैन तेम्हा पद्मिनामार्थी तेहु शपमनो हेहाहो हायी हठो. पुनी तासेने तेष्यु साथेना राजाली लाग भुजत वकनी थया धाद के अविष्यप द्यायें एटेवे के जे देवलगानी विषया इरी परम्परा धन्नके तो ते अपायो क्षेवा तपत देहायी तेमो वेहा शोभायरतीने शामे तेवेन शोभा हुयो हठो. आम छां पानायां देहाना भुजु धीर्घ आपणी आपेतु एक पक्ष धार्वा भायते यावा दीप्तु नहोतु. उपरोक्त रथ-नातगी छोडीगां ते ज्वर पुरतोज आम जेती ने आपस्युनीज शुद्धनो सह यत्यो वसावती जनताना नेत्रोमां रहतावा ग्रसरे तेहु यावा देहानी पक्ष ते विष्यु हठी.

तेहाज आमे नगरीनो भेडो आम तेवा तरह मानथी जेतो. आमे ते पूर्वीनी 'पद्मदी' नहोती रही. पक्ष 'पद्मावती भेन' जेन 'आपाय विषय विषया' तरीह जोलाभाती-धरार घटेहोना धरना जेतो. पक्ष तेहु जेता आपस्युनु शुक्ता नहि.

आम आ दुक्षीना मुंबा धामे सगाजनी विष्यु हैरी नाही छे. देह ज्ञानामो पद्मबाद यावा लागी छे. अग्नानता

संभाजी आने छीन ली
दश यह के ते तो सप्टेम्बर
के, तेवा आण्हे शा० ? आपणे
ते दश डेंग याचारी लाई

शक्तिचे छीने ? आम याचारा देवारी आपणी प्रति पथ
बंधी गडे हे, गेंदबूज नवि पथ सगाज अवनतिना आज
तरह भवि इती रुखो के ते सगाज के तेवा नाही लाई
के असे ?

आपणे भिन्हास तपासीनु तो जाणारी हे संधुओना
मतभेद सांचे संभाज पथ तेवा झगडाजीमां जूता कलाई
संधुओनो आणो हे; विनान्म-दिग्ंगन्मना गतभेद, देवाचारी
अने रुधान्दिगवासीना मतभेद, हेंदुरु अने आनंदसुन्नना मतभेद,
यति अने मंवंगी संधुओना मतभेद अने आजाना दीक्षाची
बापात तपासावा न तपासावा मतभेद, आ गधा प्रश्ने
आपणे विनाथी तपासावे तो ते सत्कर्ता प्रतिति थें,
आम कृष्णिक घागतोना मतभेद संभाज नथी सही शक्ते।
ते उपर्यात संभाजक घागतोनां पथ डेंदबूज गतत लक्षणे
मन्दाद्ये आपणे संधुओनी मुद्रण्याचट संधुओरी हीजे, आ
अरणे आपणे रवतां काँच कुचा, साहसी कुचा यकिंत न रुखा
नथी, आ वस्तु छटे के अनिष्ट ते शेंग कुहो प्रक्ते; परंतु
संभाजक विनासी दृष्टिये संभाज आयी पांगो अनो के,
तेवी कार्यक शक्तिना द्वास क्षेत्रे हे, तेवी तो ना पाई शक्त
तेव नथी.

आ वस्तुने जरा काळावी लेवा जाणारी हे व्यारे व्यारे
संभाजां तांका पड्यो हे, लारे लारे ते संभाजक अस्तु हे
प्रश्नोने वडो नडि, परंतु ते पर्मना नांगेक पड्यो हे,
संभाजां आंवा तर्ह पांडवां खर्म होई रुडे हे कैम, तेवु
कलाय लोऱ्य रुडे कैम ते गंधीर अने विनारुखी घीना
के. आ भार्तीनां अने वां० गहारीना संगमां शुरु मतभेद
निष्ठा होय ? अने हुये तो संभाजां आवर्त तक पडेहा
जरा ? अने ते पक्षां होय तो तेवा तेवां ठेंग इला दरी
अरो ? आ प्रश्नो ज्वांग द्विनासां नथी ते पर्हीना
काळां घासिक उपर्यात संभाजक घागतोना संधुओना द्विना-

अंवार भावध जायाची तान-दरिना दिलेहे प्रकाराना भाऊचा
के एकेलेक नर-पारी ते फिली प्रकारा छट्यामां आत्मामध्यं
दिहवावा मांगाना हे के शेंदे हे अेमां संधुओरी अने तेव
हेलना होय अती 'पक्ष ऐन,' शरवतचं आदिन्दु डेंदु शु
णाकु के ? शाचो धन अरवदानो मार्न तो तेमांगो पक्षां
तेव छे ! अंगना केवा शक्त रुहो ? आ साव संभाज
उद्दिश्यत होय !

आ छायपक्षी ते महालाली वस्तु के, पक्षाचारी प्रतिवा
नवप्रकारो प्रारंभ अहीथी पूर्व तेवा हेवाचारी के 'पक्षा
दारा' हेवा हेवा अरवतां यांग, विवेशी पर्वं पक्षामध्य
पक्षाचारा साहृ-धर्माना धान्दवाचो हेवाचारां ज्ञानं हेवा हेवा
भवित उपांगे योजना हेवाचारी भागतो अविष्य भाउ रेहेवा
झटकू, आम करवामां अन्व अरवू पथु हे, अेगा भाव
पक्षाचारी जोडली क्रया नथी पथु आयी कुकीना पराङ्मोनी
हृपरेणा हे, यांग आपस्यक संडलानी पथु नदूर रही-जाट्वे
'पक्षाचारी' तो अंगेव पूर्व याप हे. (संपूर्ण.)

संभाजक अणता प्रश्ने.

निश्चेप उरता की असे ?
धारिंद्र आगतमां ते मत्वे
तदा पडेहा नेहां छीन तेवां
तेव लागे हे, संभाजक आज-

तां तेव जाणारु नंदी, आने तो जग तरा मतभेदने आभग्नाना
आपरे वाचां संभाजने छीन लीन करवानो हेवाचार संधुओने
धूलरो मध्यो लागे हे; तेवने भीन संधुओं अटकावी पथु
संधाना नथी, आ पांगणा दश भाउ आपणे पोतेव ज्वालाचार
हीजे, तप्या सुधी आपणे लेमना आ धूलरो पर तुक्कानो
आ नवि करिवे तां सुधी आपणाची संभाजक प्रश्ने छक्का-
वानी, तेवा निकाल स्वतंत्र कुकिये हेवाना अने संभाजक
अवनति अटकावी प्रश्ने हेवाचारी संधित आपावानी नथी.

धारिंद्र अने संभाजक प्रश्नो-ी आगतमां संधुओनी
मुरझाविट लाजपत्राची लाच पथु थें अने ते संप्रेष-
विनामां रक्खणो. आ अरणे आपणे कृष्ण अप्तो. तेवी
तप्या नथी अने वाचां विवाचारी मान नेवंत दृष्टिये
देव वस्तुना भाव फाता या हीजे, जूता संधुओना अचक्षु
मना परथी ज्याव छे श्रीमद् देवहिंगजि कुमा अमध्याना
संधप सुधी तो ज्वापक्षीनु वाताचरव धूर तीव न झटु; ते
तेवाना संधुओं बाहिं, संसारभीर अने असलयी हर
आपावाचारांकृता, परिवाम जे खुंदे भेत्तो अनेको. होप ते
गांधन पथु शाळाना पाने अठवी अने "तत् हेवां वायान
लारु" जेवे डेवाचारी आवतु. आने ते अठारेवी तासता
नथी रवी. परंतु लयभाव पंहवां संधुका पांवी 'धर्मतु' येव
आपणे यहाना घाघु. तेवां आगर अने विज्ञाना मतभेदी
भावी अनावे आगानी रिति पर आजां हीजे. विज्ञाने
सांकेतिको सांकिरणां, आपावाचिक अल्पाक्षमां, संभाजक हितगां
के होय आपी थोडे ते आपी शक्ता नथी अने संभाज
ताराची अडोणाची आणो हे, तेवी अजगपतां अने के
भेवो पदेहा होते ते आने नथी रुखा. आम आपणे जीति-
हासिक दृष्टिये वस्तुनु प्रधकरण इती आपणे कृष्ण उत्तमा
हीजे ते संपर्काची लेवुं लेहां, आपणे लागे हे जूनी
प्रवालीयी आपणे प्रिकाम अटकी प्रपोर छे तो तेवे
आपी देवां लेहां.

आपावाची परिचितिगं आ वस्तु डेव ज्ञानी शक्ते पथु
प्रक्ते हे, आने रुधानिक संधियां अने लुध लुध रथाना
संधियां विवाचेव असेहोर छे; परंतु ते अमाण्युक विवाच-
भेद होते तो संभाजने आपा दृप न होता के अगावामां
परंपर, भागवानी, विचारीनी आजांके हेवानां, मतभेद रुखु
इती लेवो निकाल करवानां संधुओं न होता, ते अगावामां
आपणा संधी संगा दला, हेमके तेजो ज्वेकलार होतां; अने
आ अंगा भाउ संधाना होता अनो अने अनेको भीरावाची
सामग्री होयां अतां आपणु मतभेद अने क्षत्याक वित्ता
ज्ञान हो. आ वस्तु डेव सुधीरी शक्ते आज दृष्टि संधिक
संधि पासे पेलानु बेखीत अंधारवु नथी; संभाजना ज्ञानी-
वानो आपा अंधारवु नथी अवतारा स्वीकारवा नथी, हेमके
तेव हेवाचारा आवे तो तेवनी सत्ता भेवालित अनी लाप;
अने ते गोवानी उपर्यात अष्ट शक्ते नवि. बेखीत अंधारवु
हुत्तीयां तो तेवी झाँक नेहां अंधारवां आवे तो ते लेहा-

કીને તેમનાજ સાથેન વડે પગણ કરી છે. સમાજના અધ્યોત્ત્સુદી ચોલાનાની આ સત્તા-આ મહાયોગું રાખે એક ભાગ હૈ પણ તે જીવનનોંનો. અન્યથા નથી હે અંથ કે રાતિઓમાં જોઈકી કરવણા કાકા તો ક્ષારણનો વહી ગ્રામ હે અને વિના અધ્યાર્થે પણ હેઠે તેણી જોઈકી થઈ શકતી નથી. માત્ર ભાગીદીવિશ્વ સત્તા અને શાશ્વત રહેણના અમદાવાના સમાજની પ્રશ્નનો તેણે જીવા દ્વારા થઈ શકતી નથી. બાબત પ્રકારનું હોય અધ્યોત્ત્સુદી તે કહેણોંનો આસું અદ્યોત્ત્સુદી નથી. પરંતુ સગાજ અણે કે જીવા નીતિ નિયમોત્ત્સુદી મર્યાદા નોંધ આજે તેણા, અને સમાજ રહેણને તેણા જીવા જીવાનાં જાળતું હોય અને તેણે વિકાસ સામનામાં ઉપરોગ થઈ શકે.

અનીને પ્રશ્ન આપણી જીવિત અને સંઘની વિધ્યા પ્રશ્નાનીનો હે. સમાજની કુદી અધ્યાત્મ ગુણો કરે તો તેણા આજા કુદીને સાલ કરવી આ આપણી પ્રશ્નાની હે. શુન્દો કરે તેણેની ભાગ સાલ હેઠાં હોય હોય હે; પણ શુન્દો કરેણાના અભ્યાસ કે કરા હૃતના સમાંનું જાતિ સનું કરવણાના માત્ર દાખ એકાડાં સિનાય આને કોઈ હેતુ ન હેઠાં હોય. આવી સાલ દ્વારા આજાનાં આપણે હેટાં કરતા જીવાની કરતા આજા છીંને, તે આપણે જાગૃતા નથી પણ તેમાં હજુ પણ આપણે જર્દું માણણે છીંને. માનસ કાળજી દ્વારાને આજા સાલ ખૂલું - અસ્ક્રુલ અને પ્રકારદીખંડ હે. અને શુન્દો ન કરેણાર પ્રકારદીને શુન્દોની સાલ જોગદ્વારી હોય હોય તે જીવાને હોય તે જીવાને કરી નાણે હે, જે હોત સમાજના આપણનો સંમજ શકતાં નથી, જાથે આંતરિક કે આજા જીવાનાં કરાયો. પછી શુન્દો કરેણાર અને તેણા કુદીનીઓ માર્ગો કુદી દર્દ અને, જ્ઞાન પણ આવે અન્યાં જીવાનાં માનસ કાળજીને શુન્દોદીન થઈ જાય હે અને ભગતી તહે જીવા તેણા તેણા પ્રકારને શુન્દો કરે હોય. આપણે હોતાથી આપણે જાપણી રિશ્યા પ્રશ્નાની જીવારી જાતા હોય કરેણા કરતાં હોય હોયનોંનો જીવાને હોયનોંનો નથી.

આ ઉપરંતુ નીંમે પ્રશ્ન સામુદ્દોની મુશ્કીયાફણો હે; તે શ્રીકાન્તની કે ઇશ્વરી હોય તે સમાજે વિચારણાનું હે. સંપૂર્ણ જીતિની અવસ્થા વિવિધ પુનર્થી છે, અંગીંત તે અર્થ અને કામ લેણે સંકાળાંનો હે; આજા તેણેને આજા લેવા-હોણાને પ્રશ્ન બેન્ડું હોય હે. આજા તે અર્થ, કામને સીમાની આ પ્રશ્ન લાગે જણે હે; જ્ઞાન તેમાં માર્ગું ભાર્યાનાંનો તેમને આપ નથી, જો નથી કેવું હે. આપણે સામુદ્દોને સાખારાદિરશીલ રાખવા હોય, આપણી જર્દી આજા તેમને પ્રકારદીખંડ અને તેજવી જોવાની આપણુંને તમના હોય તો તેણની શુન્દોદારી અન્યાં હુદી હેઠાં પડ્દોયા. આજ કરીનું તેણું આપણે આપણું પ્રશ્નો ઉકેલતાં, સંકેતાં, સમાધાન કરતાં શીખીયાં સામાજિક પ્રશ્નો અને વિષાદાનીય પ્રશ્નો હે; તેમાં તૃપ્તનોંને પહેલું રખાન હે. આજા પ્રશ્નો નિયારેલી વખતે સમાધાનદીન અવાનપ્ત હોવો જોઈયો. એક કે પ્રશ્નોની અભ્યાસનાંની આંત્રેયી અને સમાજનાંની સમાજાનું

જાતાચરણ પ્રશ્ને અને શુન્દો કરવાનું માનસ ન્યૂન અથવા માર્ગે; પરિયુમે સમાજના રાનિ પ્રશ્ને અને કાનિ તે સામાજિક વિમાસ માર્ગ અન્યાંનું અને હે.

આમ આપણે માત્ર સંખ્ય અને જાતિસંરખા ને નિર્ણય નની હે, જે સત્તાબીજી છે કરતો આને પાંખીની કષુ જઈ હે, તેણી નિર્ણયિતા અને પાંખાનાંનું હું કરવા શું કરવું તેદો પૂર્તીજ અન્ય જરીએ હોય હે. તેમાંથી ડિપરિયિત થતાં અનેક જીવું પ્રશ્નો છેવા નથી, પરંતુ તે તો સમાજાનુંનું વાતા-વખત અમાતાં આપેણાંનું જુદ્દુધ જરોયા. તે પહેલાં સમાજાનું વિષાદ કરવા લે પણાં બાદવા જોઈયો તે મુદ્દાનો સીનારથ્યા સમાજ તૈયાર હે ? “શ્રી.”

(અનુસંધાન પૃ. ૩૩૮ ઉપરથી)

દેવાતી ન સર્વસ અર્થાં કરવાનો ઉદ્દેશ બીજાં માર્ગે હે એ તમારે ને તમારું જિગાનો જોવા કરવાનું હે ? જોવા વખતા, હૃતાપક-પૂરીથી પેટ બાળી, વરાયોડા કાદાં, શાન્તિસનાના બાધ્યાંઓ, જોગણો કારી, જેમાં ધર્મનો ને જાળનો ઉકાર થઈ ગ્રામે એને સમાજાનુંનું શું બાલું હોય હે ? જેથી તો સમાજ લાલાં અને હે, મોકાર અને હે, જેની હિંદે આદતના મોળા જીતારે હે; જરૂર તે તો અનુભૂતિ પરંતુ પોકારીન હોય હે. તમારી વિદ્યાની દર્ઢ ખ્યાલ અને હે સતતંત્ર શુદ્ધિથી વિદ્યારી જીવા હે ?

નવીન—તમારી માન્યતા પ્રમાણે કરવાં અને વિચાર ન કરી શકતા હોયએ પણ તમે તો એડી સોંગ હોય, જ્ઞાન રૂપા-કૃત્વાનો જોવો હે !

કુશુમ—મે તે નિયારા કરીજ શ્વર્ણો હે કે “ હેઠેની રૈચ-કૃત્વાનું નહિ અને કે જતાં હોય તેણે તેથી થતા જીવાનાની સમયની પાત્ર વાળાનાં, આદત અને અધ્યમ આતર શુદ્ધ આદી પહેલાં, શુદ્ધાર્પમાણી જોટોસે વખત અને તેદેને જાપત જાતાં, દુરિજન અને હેઠ સેચાના માણી માનર જન્મ આર્થિક કરવોના

(અનુસંધાન પૃ. ૩૩૯ ઉપરથી)

તુલાર વલન કરવાનો લે દાબો-દંબ જાણે હે તે છોટ નથી. અન તેથી લક્ષણ નથી એડી યાંદી થતા, પ્રશ્ન અને લેખણ જાતાં જેથી પ્રેરણાં અનુભૂતિ આંતરિક પણ હોય હે.

ઉપરાની જોકેની પગલો-કાઢાં આજાનાં છે અને તે અનખાં સુરી સંખાપ લેવા નથીની કીને હેઠી દેવાના કેંદ્ર આંત્રેયાં જાતું જાયાની જાતી પણ સગાજાનમાં આવી સુધોલીની થઈ નાના જીવાની થઈ ને આને જેણસમજન રહેતે હું કરવા પૂર્તીજ આ લલ્લેશરત હે. અનેલાનો હેઠું રખણું હોય, સાધુ સંખાપી જાતી જીવાનાં, આદત અને અધ્યમ આતર શુદ્ધ આદી પહેલાં, શુદ્ધાર્પમાણી જોટોસે વખત અને તેદેને જાપત જાતાં, દુરિજન અને હેઠ સેચાના માણી માનર જન્મ આર્થિક કરવોના

દશ. શ્રી નગીનિહાસ શાહું રખારું ઇંગ્રીઝ અત્યારે અન્યાં કે, ૨૮૨૩ માલાન હતા, તે હિપરિયન તાલેટર કે, ૧૦ ન્યૂસારી ક્રૈન કુદું મંડળ તરફથી મણાન છે કુદું કે, ૨૬૨૪ માયા.

सुधरेलुं २९वं—कूटवं.

त्रैभक्त—मामृत छवेरी.

डें आणी ! आ झाणे साक्षी पहिली कांची जग्या आवां ?
कुसुम—मे तो आपणी पेशांगां रुतन तेसी गूढी
मग्यां कि त्या ‘मे वाणी’ जग्या होती.

तवीन—आणी, तमे सुधरेला, भजेला, विचारक जां
रोवा—कूटवा नजो, भजी भीज्यांगो मारे कंडेहुंज शुं ? तमगे
आ रोक्यातुं नयी.

कुसुम—जेंगा तमगे आरहुं शुं दूळ आणी आवे के ?

तवीन—डें न आणी आवे ? तमारा जोवा आणेवा,
मुमारांनी भेडी नेही वालो अंशारा पतिना घल, मंडकारी
गा—आपांना पुना, ज्ञारे रक्षा—कूटवाना जंगली दिवावाने
पोषकु आवे. तारे भो डें न वावे ?

कुसुम—मुमारांनी वालो कीजे तेवा जोहुं शुं दूळ आणी
धींगे ? नेम पुषेंगे वालो दौरे के तमे आवे पण्य वानो
कीजे धींगे !

तवीन—जेंगा रुपानो ने वालो शुं संनधे के ? डे आवे
आणी पॉल आरौपांथी व्यववा आणी पुषेंगे पर टीक इरो को,
मिना करतां खल कलुक दींगे कवे न अव्यागे निष्यं करोने !

कुसुम—पुषेंगो वालो अने रुपानो संनधे के एटेवें
वात क्षुं शुं. आणी गवाव आपार पुषेंगे वजेचती नयी.
समज्या !

तवीन—आ तमारी ल्लीकां भेडी के.

कुसुम—जेंगी के ? तो साक्षी ! नेवा ल्लीकां कु-
वरावे के, सुधाराना लांगालच उद्दीपांगां भंडां वावावे के,
तेवा नांडेर रक्षांसी विधवा उल्लिनी, शात अने जेण
पोषाराना नासनी, देवक्षवी, ज्यामनी, रेव—कूटवानी,
जमध्यारोगी, व्यापारोगोनी, विचेंगे सुधाराना रामदा लाल्लीने
वालो दौरे के, दरावे दौरे के, नेम आवे कूडीने जाती हूंगीं
धींगे तेव साक्षींवालो वालो (आपणे) करती वावते एक-
टीन झाणे दुटीदुटीने दाव पाडे के. आ नाहुं नेंड प्रकाश्यु
कुपरेहुं रक्षुं कूटुं के. इकत देव एटेवो हे अने प्रमुख
पिना डांग व्यावांगे धींगे, अने तमे एकेचाता सुधरेला
पुषेंगे एक गोदा प्रमुखानी हेप्रेण वावे रेव—दूरा के.

तवीन—तमे तमारे नंदामो आवाव डोंगे ठो. साला-
गोनी आपणे कांच अने तमारी भैयावेनुं रक्षुं—कूटुं कंपां !!
तमारी वातमां समज्यांज फहती नयी.

कुसुम—कृष्ण समज्यव न पवी ? तमे लासनप्रेमा ज्ञाले
कुडीने आणग व्याववानी गरदी ज्ञाती ठो, एटेवे जाणी
समज्य पडे !

तवीन—गेंगे तेव जांगी के सुधरेला करता अमे
व्यवा साग धींगे. पण्य आपणे भीज भुदे उतेवी पद्या,
एटेवे अने ज्ञातो भुदी, कूटवानो ने व्यवानो आंगधे
व्याववी समज्यावे.

कुसुम—साक्षींगां लांगालच आपणे याप, दरावे
याप, जांग विधवी तेनी तेव, मारहुं के घर उपर व्याव आवे
लारे लुटील वर्त्तिंद. लुणे ! नांडेने तेव वर्षनी उभरे
विधवा वर्षी के; तेवनी धूम-धूमीव जमणे याप के, जानिस्नानो
याप के, वीनी भेडीजोनी ठारेवी आपक याप के; आ
गांधी कैन धारीनी उत्तिअ अने लहोअलाली नयी !

कुसुम—जेंगा वावे नवाच नयी. तमारा एकेचाता
धंगिलाणा करता जे आण देवज्ञे आवा के, अने तमे डोध
देवज्ञ वांग इकुल पक्षु भरी वावा को. जांग तमारा लेवो झाले-
ज्ञान, एक वाप शुद्ध आदीमाल रहेनारी, एक वापत
महास्वाना सीधार्ज तरीक गहास्वाना ज्ञानी, आदीमाल
वास करनारी, एक एकवाना शासन रोगामां भजेवी लेऊ अने
नवाच वावे के.

तवीन—तमगे वावे नवाच वावे. आणी तमारे कुपुक
करुं पैदों के आभायां पर्याप्ते पुरी वाहारी के, अने
भोवीजे तेव्हुं कीजे धींगे. लुणे ! आज लहोरमां उपा-
व्यवा भैस करी तीव्हीजे नक्कचार पोषा यत्ती तेवी ज्ञानांगे
पोषेंगो पोषा दावां याव के; वरसगां यांत्रंतं वर्षेंगा
येव के; धर्मरी इत्तीज ख्याने तीर्थनी रथणे भोवीजे
याव के; वर्षगां वीम-धूमीव जमणे याप के, जानिस्नानो
याप के, वीनी भेडीजोनी ठारेवी आपक याप के; आ
गांधी कैन धारीनी उत्तिअ अने लहोअलाली नयी !

कुसुम—तमारा जेवा भेडी ने विधवक कुरमां
विधव शक्तिनी आटवी उपक लेऊ वारे तमगे तमारा दित
अंतर याव शाह कुरुं लेऊने के, एटेवो सुधरेलामां हंल
के केवा करता तमारां धवे वावरे के. येवो रक्षनी
तमारो आपेक्षान उंग, राजि जोलान न करवानी भेडी गांध
दौरे के अने आपणे तांग भुदीनी राजे गालगलीद
किंप्राप्या कुला. येवो तमारो सुरेश तमारुं भावुं वावे के,
ने धर्मनी गांधी भुदी वावे करे के, ते सीकर पीवामां,
नांडे-सीनांगे लेवामां अने डोटल-वेतल अने भेड
मेलां उडिअनामा पैसांडुं केट्हुं यापी करे के ! इम्बुन
तमारी सेवापवित्री उपर उपरानो ने वांभावय निवेलमां
कुरमांने उद्दीपांग तीर्थ ज्ञाने भावुं के ! “शासने भवि
प्रदेशांडुं भेडीआप पक्षु वीरेवानेव चापेडोंगे, शासननी सेवा
करती सर्वव अर्पणु करुं येथी अनिक सद्गुण कुवन क्षुं दोप
करे !” आ तमारी दावल रेवा जेवी नयी तो भीलुं शुं के !
आजे डेवरीपांग तीर्थ ज्ञाने भेडुं देव-गवुं के, चापुवुरमां
प्रतिभावो भंडीत याव, जांग अमे व्यवानो भावी, दरावे
करी युपवाप याव वावा. शुं जेंगा लासनी सेवा नयी

(अनुसंधान पृ. २३८ उपर)

सायुं स्वाभिवात्सल्य.

वेष्टकः—भगवन्महाकाश लालन.

पूर्णिषुषुकृ अनेक दीते गत्वा है. जो पर्वता आहि दिवेशमां दृग, शीत, तथा ज्योति आवनाना आधोप सिद्धितिर्तु भवनी शितिमे पाचन करनामा आये है. अने लैन दर्शनना अने सम्बन्धितना शुण श्वरकृष्ण के आरोहि इट्टों काल मेरे हिन्सोंमां लेवाप है. और्हों कालमे अन्य दिवेशमां लड शकाप है.

साथे साथे आ दिवेशमां प्रकाशना, धूम, स्वाभिवात्सल्य, सेवकाहित आहि अनेक दिवेशो नारा वा भैरवीं स्वरूपमां करनामा आये है, अने लेने यथायोग्य लाल लेवाप है. आ श्वर्णे के शर्व पूर्णिमेतु निःपूर्ण करनागे अवकाश नहि होताथी ए शर्वमां के अस्तारे देवते जड़ी अने भग्नपूर्णू आगत है, तेना माटेश आपणे नियार हीरीशू. 'स्वाभिवात्सल्य' के संबद्ध भूग 'शादिभिर्वल्ल' आधवा 'शादिभिर्वात्सल्य' है. तेने अपश्च अप द्वारा स्वाभिवात्सल्य कहेवाच है. आ स्वाभिवात्सल्यना शब्दनो उपयोग अलारे के शीतिमे करनामा आये है, ते कर्ता पूर्णिमा विश्वाग देवशमां आ शब्दनो विश्वार अप शो है. स्वाभिवात्सल्य जटूते आपल्य समान धर्मिकाठोगा अते प्रेमताळना दर्शन, आ प्रेमकार्या आ वात्सल्याकाशना आपणे अनेक होनाडी शहीओ तेन छींगे. अत्यारे 'स्वाभिवात्सल्य' ते अर्थ भगवान्माणी, संघ ऋग्य, अश्वतो नायकाशीना जग्नुग्रहां समाववाहां आये है. आ अर्थ अने आ आवना आ शीतिमे शेठी चंद्रुचित अनी आहे है के, ए शब्दनो विश्वात्सल्याने गहता तदन शुद्धी जवानी आपनी है. आ शब्दनो विश्वात्सल्य अर्थे है के आपणे आपल्ये अले पहिं सद्गुरुर्मां है, ते असुलातिना हो. —तेनु हुण नियारज्य वाप, तेनी हुऱ्हेतो आपणे होये हुर वाल अने तेने जेतनु अवन आवश्य न लागे जेवा तेने जग्नीशतना साप्तो आपणा दारा शुद्ध पूर्णेवामा आये, तो तेन अरेपाह स्वाभिवात्सल्य है, और अरेपाही प्रेमकाशना है, और अरेपाही आमानी उदासतानु दर्शन है अने अरेपाह स्वाभिवात्सल्य ओव है.

आ हुपूर्णी माझे हुऱ्हेतु जेतु नसी के लाल के लगाश्वार्ये आहि आप होते स्वाभिवात्सल्यनी—तेना प्रेमकाशनानो अर्थ वाप नवी. अवारात तेचां लगाश्व करनारी आवना तो हुविल होय है, परंतु लेट्ली तेनी उलम आवन होय है, तेव्वा प्रगाशमां तेनी हूण उलम हेषातां नवी. आपणा शाश्वेमां पैच्य कर्मु है के ए शाश्वेमे जे हेतु हूणतु होय, ए हेतु शीदातु होय तेमां त्वयो वाप कर्वे लेछें. अने अहार्वे लेप्पेमे धार्जे के लैन धर्मनी निःपूर्ण पताकाने डिती राखार लैन भगव डहो है लैन संघ डहो है आवक सम्भवाप डहो, ते शेष्टी हूण शुद्धी जेवानी वीहाश्वां अनेकां सप्तपापो है के लो वास्तवर तेप्पेमे भारे जेवा शरनदो करनामां न आये तो तेनी कर्मातीत अपकृत परिवामा आपी पैच्य आंखां है, पूर्वे ओळे झाग गेवो हूण है के

सभये लैनो विषुक धनसेवितना लेकता होए तेजेने आय फुर्हापूर्ण प्रकाशनी अपकृत है सापनां नहि लागती हूण. परंतु आहे सगय तदा पकडी आये है, आहे आपश्च नातिर्पुरुषो दिवेशे ने दिवेशे जेवाना सपाटामा अपदावा आगा है. आके अके उडरता सुकोने नेटकी वा धर्मी नहि भावावाची सहाना दृश्यां पूर्णप्राप्तावाची डाढी गती तये प्रमवा पाडी रक्का है. जेवा सभये एवा शीर्षतो है. तेजेने शुक्ल दान आपी, तेजेने नेटकीची व्यवाची, तेजेने नाना नाना वेळानी लेजवाप हीरी आपी तमाची तुपत्तांप्रथ वक्तव्यीने शहूव्य है. आये जेवर सायुं स्वाभिवात्सल्य है, ए द्वेष्टयां वाचेतुं आज तेजेने आगमी अन्यमां अनेक देवपेना भगेकर हूण आपती, तेजेना अंतर्वी हीरी अधिष्ठो तमारा आविमां द्वेष्टने गाउ उल्लवण अभूतानी धाराव्या वरसावाही.

आहे ओळे दिवेशना भोग्यानी है ओळे दिवेशनी हुण्ही है प्रक्षावनाथी, आधवा ओळाव याली है वारकरो ओळो आप आर-पौद-ज्ञा जेवा शुगारा आवाची है नारा अव्याप्तेने शहूव्यारी रश्वनां धीनी जेवीमां नेटकीलक्षी सप्तसार्ह भोग्यानी भद्रत्वांकांगाची तमे जेतक्षुं कुरुते पुरप उपार्जने करणे तेवी अंतर्वाप्य पूर्व ओळे संवर्भिना अंतर्वी आवी आविष्येयी भेषजाही.

सभाजना विश्वात्सल्य शीमतो। आप जरा हिंड उतरी तपास करणे तेन उपर्तुं जेतुपूर्ण अपवीत आवरी नहि. आप ल्यारे अतिरिक्तनो भेष्ट केंद्रो, ज्वारे पद्मीभवनी वाहुवादनी क्षुशुक वाहीलेनी आवाची शाश्वत तेजना अंतर्वाप्य आपना दीलते शुद्धा भेष्टो, आप ज्वारे शुद्ध दानानी भद्रताने आपना उल्लपटमां उतारतेही अने शारा राघिवात्सल्यनी विश्वात्सल्याकाशाजेने तमारा अंतर्वाप्य चेष्टेते दिवेशे रूप गाङ्गुष घटो है अतिरिक्तनो शब्दिक भेष्ट केंद्रो अर्धसाधक नवी नीवणो तेवी हलवैगण्डा वषु कर्प-साधक ए संज्ञा राघिवात्सल्याकाशी आवाचीत है तेजाना साधभिं जग्नुग्रामी, जेताना राघवेनी, आची सेवानी आव नारी गीर्वेदे.

पूरुषो। अंतर्वाप्य गांगुषपातुं है आप जरा शीमतोनी इनिपाची आहाद दिवेश गरीभा अने सापार्जु लैनोनी शुनिपाची आवाचीने वसो, तेजानी अंतर्वी हीरी जग्नामो तमारा रप्तेने जुलेही अने ले तेजेने गे कुरपनी जग्नामो आहाची, गे कुरपनी वेनांगाची जग्नामु कमकाची है वाग्धाची आविष्येनी उरिणा आये तो आपना पुरुषोपाचिर्त पैसाना वषेषु आ मार्गी वाणी गे पुनित वेपवी तेमनी जग्नामोने द्वेषो अने जे रीत सायुं साधभिं राघवाना की आवा अने परक्षात्पुर आयुं आवो! हिंदेम!

कृष्ण आपतो आंक आप.

आपतो आंक—पूर्णिषुषु आधिक तडेवदेवा करण्ये आप रहेये

व्यवस्थाप.

आ पत्र भगवन्महाकाश लीरावाल आवने लैन आरपोहत प्रिंटी प्रेस, माणड रुटी, मुंगाड नं. ३ गां छपेषु हो. अने गोकर्णाच समग्रावाल शाहे 'लैन शुक्र सोम' माटे २१-३०, मनज रुटी, मुंगाड ३, गांधी प्रगट १३५ हो.